Impact Factor : 0.4521(UIF)
ISSN:- 2393-8900

Research Article

हिंदी उपन्यास-साहित्य में नीलू-नीलिमा-नीलोफर उपन्यास का चिंतन

डॉ. सौदागर सालुंखे

प्रस्तावना :

नीलू-नीलिमा-नीलोफर उपन्यास में रचनाकार ने प्रेम को कथा-भूमि का केन्द्र बनाकर दो प्रेमप्रसंगों को लेकर कहानी रची है। इस कथा-भूमि को यथार्थ धरातल पर खड़ा करते हुए कल्पना केसहारे कथा को एक नयी दिशा प्रदान की है। इसमें प्रेम कहानी को माध्यम बनाकर निम्न वर्ग और उज्चवर्ग के बीच पनप रहे ऊँच-नीच के फासलों पर दृष्टिपात किया है। प्रेम-कथा को आधार बनाकर लेखकने इस उपन्यास में जाति, धर्म तथा सांप्रदायिकता की समस्या पर प्रकाश डाला है और यह बताने काप्रयास किया है कि किस प्रकार समाज के लोग धर्म और संप्रदाय को लेकर मरने-पिटने पर तुले होते हैं।समाज में पनप रही अमानवीय घटना एवं समस्याओं का बड़ी जागरूकता से अमन किया है उदाहरणके लिए कुछ कथन द्रष्टव्य हैं

"मैं पहले उस काफिर का खून पिऊँगा, जिसने मेरी बहिन को बहकाया है. और इसमें अगरमेरी बहिन भी मरती है तो मुझे कोई अफसोस नहीं होगा।"

यह घर इन्सानों का घर है, कसाइयों का घर तो नहीं है। उसने काफिर से ब्याह किया है, तोक्या मैं उसे दिन-दिन पीटता रहूँ। उसका बच्चा निकलवा दिया तुम और क्या चाहते . में पू. तो।""कौन जाने नीलू उस लौंडे को इस्लाम कबूल करने पर रजामंद कर ले।"

"आप मुझे क्या समझाओगे?आपने तो अपना जमीर बेच खाया है। रोज उस काफिरफकीरचंद की अरदास में जो बैठते हो। आपसे तो बात तक करना हिमाकत है।" ये गीदड़ भभकियोंकिसी और को सुनाइए। आपको हिन्दुओं के टुकड़ों पर जीना मंजूर है, हमें मंजूर नहीं है।"

"बड़ी घुल-मिलकर बातें कर रहा था देवेन्द्र तुम्हारे साथ। बार-बार उठ-उठकर तुम्हारे पासजा रहा था। उसे क्या इशारे कर रही थी?आँख लड़ाना तो तुमने उस स्साले अल्ताफ के साथ ही सीखलिया था। वह मेरे पास बैठ ही नहीं पा रहा था। लपक लपककर तुम्हारे पास जा पहुँचता था।"अल्ताफ नहीं मिला तो अब इसे घेरने लगी हो।" नीलिमा का पति मुबोध अपनी पत्नी मेंअमानवीयता से बातें करता है। इससे पता लगता है कि उसने मानवीय मूल्यों को बेच खाया है। लेखकयह बताना चाहता है कि पत्नी किसी दूसरे के साथ अर्थात् अपनेपति के मित्र के माथ बातें करने परवह भी किसी दूसरे के साथ अर्थात् अपने

पति के मित्र के साथ बातें करने पर वह भी पति के कहने परउस पर सुबोध शक और संदेह व्यक्त करते हुए पत्नीइन उपर्युक्त सभी विचारों से पता चलता है कि इस उपन्यास की कथा भूमि छोटी होते हुएभी दो प्रेम कहानियों को इस कहानी में मंजोया गया है। उन प्रेमियों के परिवार, उन परिवारों केसदस्य और उन प्रेमियों को अनेक मसीबतें पैदा करते है। उनके विवाह को जगदीश नामक मित्र मेमदद मिलती है और प्रेमिका की जूही बिखर जाती है। उन परिवारों के परिवेशों को समेटते हुए इसउपन्यास को रचा गया है। एक और महत्वपूर्ण बात यह दिखाई है कि धर्माधता के कारण मनुष्यमनुष्य न रहकर पशुओं की भाँति व्यवहार करने पर तुला होता है। अपनी सगी बहिन को भी धर्म केमम्मुख नीच समझकर नजर-अंदाज किया जाता है। मानवीय मूल्यों को भूलकर, दो दिनों न पहचानकर उन्हें बहुत यातनाओं का शिकार बनाया जाता है। लेखक इस कथा-भूमि को माध्यमबनाकर यह दर्शाना चाहते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की कथा-भूमि में प्रमियों के दो जोड़ों को केन्द्र बिन्दु बनाकर, समाज में बडरहे सड़ियल और कुर रीति-रिवाजों का चित्रण किया गया है। धर्मांधता. मांप्रदायिकता, जातीयभावना, जाति के नाम पर संबंधों की टूटन आदि को दर्शाया गया है। धर्म के नाम पर व्यक् पशुता कोअपनाने में भी हिचकिचाता नहीं, अमानवीयता से ओत-प्रोत होता है, इन सभी की प्राफी उपन्यासकी इस कथा-भूमि में प्राप्त होती है।

इस कथा-भूमि में एक और मुस्लिम लड़की नीलू-उर्फ नीलोफर और हिन्दू लड़का सुधीर इनदोनों की प्रेम-कथा है, तो दूसरी ओर मुस्लिम लड़का अल्ताफ और हिन्दू लड़की नीलिमा का प्रेमप्रसंग। नीलोफर और सुधीर की प्रेम कहानी विवाह के पवित्र बंधन में बंध जाती है। उन दोनों कीयुगल जोड़ी प्रेम की अंतिम सीढ़ी को पा लेती है। वे दोनों परिवार के विरोध के बावजूद भी विवाह केपवित्र बंधन में बंध जाते हैं। दूसरे प्रेम-प्रसंग के संबंध में ऐसा होता नहीं है, क्योंकि नीलिमा अपनेपारिवारिक परिवेश की वजह से अचानक अपने घर आये हुए सुबोध के साथ विवाह के पवित्र बंधनमें बंध जाती है। नीलिमा के इसी निर्णय के कारण आगे चलकर उसे एक बिपम स्थिति का सामनाकरना पड़ता है। सुबोध नीलिमा पर शक-संदेह करते हो उसके साथ पशुता का व्यवहार करता है।सुबोध के इस व्यवहार से नीलिमा के मन पर चोट पहुंचती है। धर्मांधता के, सांप्रदायिकता के अंतर्व्द्]को यदि किसी ने झेला है तो नीलू, नीलिमा और सुधीर। प्रमुख रूप से इन सभी विषम समस्याओं केबड़े बेदर्द शिकार ये तीनों बन चुके हैं।नीलू और सुधीर के व्याह से उनके परिवारों में अनेक समस्या पैदा होती हैं। दोनों परिवारमें विरोध उत्पन्न होता है। अंत में सुधीर के परिवार वाले इस विवाह को अपना लेते हैं। परन्तुनीलोफर के परिवार में से सख्त इनकार जाता है। नीलोफर का परिवार कट्टर मुस्लिम माप्रदायिकपरिवार है। इसी कारण नीलोफर के गर्भ में पल रहे बच्चे को भी हमीद मरवाता है, गर्भवती नीलोफरको माँ की अस्वस्थता के बारे में बताकर, फुसलाकर सुधीर के यहाँ से उसे अपने गांव ले जाता है।

हमीद नीलू को घर ले जाने से पहले उसके गर्भ को निकलवाने के लिए अस्पताल ले जाता है।नीलोफर को इस बात का पता चलते ही अपने भाई हमीद मे गिड़-गिड़ाकर मत्रते करती है ऐसागुनाह मत करो भाई जान' फिर भी हमीद टस-से-मस नहीं होता। यहाँ पर लेखक ने उस पात्र केमुखोटे पर, शरीर के प्रत्येक रक्त के कण-कण में, धर्म के लाल रंग की सांप्रदायिकता को भर दिया है।धमधा में बह पशुता

का प्रतीक बना हुआ है। तीन चीखते हुए बेहोशी की हालत में फर्श पर गिरपड़ती है। यहाँ पर लेखक एक मासूम, निरपराध लड़की या माँ की करुणाजनक, तड़पन के स्वर कोदर्शाया है। हमीद को यह भी खयाल नहीं रहता है। हमीद पर धर्म और कीम तथा मांप्रदायिकता काभूत मवार हुआ है। यहाँ पर लेखक बेनकाब करता है कि इन्मान-इन्मानियत मे ज्यादा कौम औरसांप्रदायिकता पर मर-मिटने की बातें करता है। हमीद कहता है-"मैं पहले उस काफिर का खूनपियूँगा, जिसने मेरी बहिन को बहकाया है और इसमें अगर मेरी बहिन भी मरती है तो मुझे कोईअफसोस नहीं होगा।" रचनाकार ने एक भी सीरियल मिथ्या आडबरों, जातीय भावना, धर्म कीसंकीर्ण सांप्रदायिकता को बहुत बारीकी से बहुत ही सजग, सचेत और सहज रीति से बे-नकाब किया है।

इस उपन्यास की कथा को भीष्म साहनी ने अपने बहुचर्चित उपन्यास तमस की जमीन सेही उठाई है। फर्क सिर्फ इतना है कि इस बीच हमारे सामाजिक संबंधों व्याकरण बदल गया है, फिर भी भीष्म जी ने पुरानी कथा की जमीन से इस उपन्यास की कथा उठाई और उसे सांप्रदायिकतापर केंद्रित करते हुए, जो प्रेम के बीज में कैक्टस के पौधे की तरह उगती है - केवल इसे अविश्वसनीयबना दिया है बल्कि सपाट भी।"

निस मध्यवर्गीय और उच्च मध्यवर्गीय समाजों में अंतर दिखाने की कोशिश भी की गयी है।सुधीर और नीलू के प्रेम-प्रसंग को लेते हैं। सुधीर निम्न वर्ग से जुड़ा हुआ है। नीलोफर के परिवार केऔर सुधार के परिवार के विचार संकीर्ण हैं। धर्मांधता को लेकर चलने वाले परिवार है। इसी बजह सुधीर और नीलोफर के विवाह का उन दोनों परिवारों में विरोध किया जाता है। इन दोनों प्रमियों कोजाति, धर्म संप्रदाय जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज का भी इन्हें मुकाबला करनापड़ता है। सुधीर और नीलू को अपने लगते जिगर का और अपने प्यार की निशानी का अर्थात नीलू केगर्भ में पल रहे बच्चे का बलिदान देना पड़ता है।

दूसरे प्रेमियों के जोड़े में इसके विपरीत विचार व्यक्त होते हैं, अर्थात् उच्च वर्गीय होने के नातेनीलिमा के पिताजी निसंवर्गीय विचारों के विपरीत सोचते हैं। उच्चवर्गीय होने के कारण वे अपेक्षाकृतज्यादा मुसंस्कृत हैं। वे उच्च विचारों वाले दिखाई देते हैं, क्योंकि इनकी बेटी नीलिमा क मुसलमानलड़के अल्ताफ से प्रेम करती है और उसी से ब्याह करने के लिए तैयार भी है और नीलिमा के धर्म, जाति तथा संप्रदाय को भूलकर अपनी बेटी के मस और भविष्य के बारे में सोचते हैं और अपनीबेटी को समझदार समझकर उसकी जिन्दगी उसे स्वतंत्र रूप से जीने का हक देते हैं। परतु नीलिमा कादादी को यह सब पसंद नहीं था। दादी की मोच तीलिमा को लेकर यह थी कि वह अपनी पोती कीशादी अपनी ही जाति-बिरादरी, संप्रदाय के अनुसार करना चाहती थी। इसी कारण दादी मां नीलिमाके पिता को मचेत करते हो नीलिमा को उम मुसलमान लडके अल्ताफ से दूर रहने के लिए गलाहदिया करती थी। परन्तु नीलिमा के पिताजी इन सभी बातों पर ध्यान नहीं देते परन्तु नीलिमा दादीमा की चिन्ता को देखकर और अपने परिवार के वातावरण को देखकर अपना निर्णय बदल देती है।और मुबोध से विवाह करने का अटल फैसला करती है। नीलिमा के पिता उसके इस फैसले मे ना खुशथे। फिर भी नीलिमा को समझाने की कोशिश करते हैं कि नीलिमा, चाहो तो अभी भी निर्णयबदल सकती हो, शादी-शुदा जिन्दगी आगे तुम्हें

व्यतीत करनी है। इसीलिए यह निर्णय करने से पहलेएक बार ठीक तरह से निर्णय कर लो ताकि आगे पछताना न पड़े।" इस पर भी नीलिमा अपने अटलनिर्णय से टम-से-मम नहीं होती, तो पिता कहते है कि तुम इस विवाह से खुण हो, तो मैं भी तुम्हारेइस फैसले से सहमत हूँ।

उपर्युक्त विचारों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि किस प्रकार लेखक ने बड़ी कुशलता मेनिम्न मध्यवर्गीय और उच्च वर्गीय विचारों का अंतर बहुत सहज-सचेत, और स्वाभाविक रूप में व्यक्तकिया है। जब हम निम्नवर्गीय और उच्चवर्गीय विचारों का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि इसउपन्यास में निम्न वर्ग के विचार, धर्म, संप्रदाय तथा जाति को लेकर चलते हैं। उच्चवर्गीय इन विचारोंके विपरीत चलते हैं। निम्नवर्ग इन विचारों से परे होते हैं। इस प्रकार लेखक ने निम्न तथा उज्चवर्ग केविचारों को अभिव्यक्ति दी है। भीष्म जी की निम्न मध्यवर्गीय की पकड़ बेहद प्रशंसनीय है।

लेखक ने एक ओर निन्नवर्गीय पात्र-हलवाई के द्वारा जातीय भावना को जागृत किया है। फिरउसी को उच्च पात्रों के जरिए लुप्त भी किया गया है। जातीय घृणा की भावना को भी उजागर कियागया है। प्रस्तुत उपन्यास में भीष्म जी ने बताया है कि धर्म, जाती, संप्रदाय इन सभी का गठधन हीमनुष्य को कमजोर बनाता है और इसी धर्मांधता के बहाने मानव अमानवीय और खतरनाक हो जाताहै। मनुष्य की इसी धर्मांधता और सामाजिक बुराइयों को उजागर करने में लेखक सफल हुआ है।

मुख्य रूप से प्रस्तुत कथा-भूमि में द्वद्व और अमानवीयता के प्रतीक के रूप में हमीद औरबोध जैसे चरित्रों का निर्माण किया गया है। इन पात्रों द्वारा अमानवीयता, पशुता झलकती है| हमीद अपने माता-पिता को अपनी कीम, धर्म के सम्मुख कुछ भी समझता नहीं और पिता का सम्माननहीं करता क्योंकि उसके पिता एक हिंदू के घर जाते थे, उसे हिंदू के घर पर जाना अच्छा नहीं लगता।इसी बजह से अपने पिता की बेइज्जती करते हुए कौमी अंधत्व में हमीद कहता है-"ये गीदड़भभकियां किसी और को सुनाइए। आपको हिन्दुओं के टुकड़ों पर हमीद की इन बातों पर खान साहब बौखला उठे और गुस्से से कहा-"दूर हो जा मरसे, वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।"

जवाब में हमीद गर्मजोशी से पिता से कहता है-बालिद हो इसलिए चुप हूं. बरना कोईऔर होता तो इस तरह कौम के नाम पर कालिख पोत रहा होता, तो उसे सीधा सबक सिखाता।"

मुख्य रूप से उपर्यक विचारों में साफ होता है कि इस उपन्यास में कौम, धर्म के नाम परसंप्रदाय को केंद्र बनाकर, समाज में बदलते हुए संबंधों की टूटत और धर्माबरों का भरपूर मात्रा मेंपरिचय और व्यक्ति के सिर पर कम और धांधता के तहत मनुष्य का अपने-आपको मरने-मारने केमानवता के-कृत्यों पर उत्तर आना, समाज की इन सभी समस्याओं को लेखक ने बड़ी सफलता केसाथ गढ़ने का सफल प्रयास किया है। उपर्युक्त कथनों से साफ होता है कि इस उपन्यास में कौम धर्मऔर संप्रदाय के आधार पर टूटते मानवीय संबंधों का तथा धर्म के आडबर का चित्रण सफलतापूर्वककिया गया है। बताया गया है कि जो व्यक्ति के सिर पर धर्म और मांप्रदायिकता का पशुत्व सबारहोता है, तो वह धर्मांध बन जाता है। इस सामाजिक समस्या का सफल विश्लेषण इम उपन्यास मेंअंतर्निहित है।

Impact Factor : 0.4521(UIF)
ISSN:- 2393-8900

संदर्भ संकेत :

1. आज का दलित साहित्य -डॉ. तेजसिंह
2. मेरा सफर मेरी मंजिल - डॉ.डी.आर जाटव
3. जूठन - ओमप्रकाश वाल्मीकि
4. हिंदी और मराठी दलित साहित्य - एक तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. सुरेश मुळे
5. नंगा सत्य - डॉ. सुशीला टाकभौरे
6. चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य - डॉ. शौराज सिंह बेचैन
7. दलित मुक्ति का प्रश्न और दलित साहित्य - दिनेश राम
8. नीलू-नीलिमा-नीलोफर : डॉ. भीष्म साहनी
9. उपन्यासकार भीष्म साहनी डॉ. बसवराज के. बारकर